□□□□□ □□□□□□□□

जनसत्ता 19 अगस्त, 2014 : लाल किले से प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के संबोधन से पहले उसकी हवा बनाने में कोई कोर-कसर नहीं छोड़ी गई थी;

संबोधन के बाद उसकी गूंज बना□ रखने की भी ताब□ तो□ कोशिश जारी है□ लेकिन हवा की हवा क्या थी और अब गूंज क्या है, यह मैं न आंक पा रहा हूं न जान पा रहा हूं□

जवाहरलाल नेहरू से लेकर मनमोहन सिंह तक कभी, किसी के लि□ ऐसी हवा नहीं बनाई गई थी□ नरेंद्र मोदी के लि□ बनाई गई क्योंकि उनकी सारी राजनीति ही हवा के बल पर बनी हुई है□ और हवा का चरित्र है कि वह टिकती नहीं है और रुकती नहीं है□ नरेंद्र मोदी के पक्ष में दो बातें थीं- आजाद भारत में पैदा हुआ पहला प्रधानमंत्री और लंबे समय के बाद अपने बल पर बहुमत से बनी सरकार का मुखिया! दोनों ही कारण मजबूत थे लेकिन इनका रिश्ता लाल किले के भाषण की स्तरीयता से तो जु□ता नहीं है□ फिर भी मुझे यह बात खासतौर पर अच्छी लगी कि मोदी लिखित भाषण नहीं प□ेंगे, कि नरेंद्र मोदी पाषाणवत शीशे की दीवार में दुबककर, देश की बहादुरी को नहीं ललकारेंगे! कितने दरिद्र बना दि□ ग□ है हम कि ये सब बातें भी विशिष्टता में गिनी प□ती हैं!

प्रधानमंत्री ने दोनों बातें कीं- वे धाराप्रवाह बोले और शीशे की दीवार हटा कर बोले ! पिछले दस सालों से हम जिस बोदे किस्म का संबोधन लाल किले से सुनते (?) आ रहे थे, भाइयो और बहनो, उससे यह □क्दम भिन्न था□ हमारे सामने □क प्राणवान, ऊर्जावान प्रधानमंत्री ख□ा था जिसके पास अपनी भाषा थी, अपना तेवर था□ उसकी गुजराती असर वाली हिंदी में □काध खांटी गुजराती शब्दों की छौंक मुझे भा रही थी□ मैं यह भी देख पा रहा था कि यह □क आदमी है जो सत्ताधारियों के कुनबे से नहीं आया है और उसके भीतर उस जमीन की याद ताजा है अभी, जहां से वह उठा है□ मैं यह भी देख पा रहा था कि इस आदमी को पता है कि आज वह सबकी नजर में है और यह भी कि वह नजरों में बने रहने का गुर जानता है□ लेकिन... इससे आगे? भाषण खत्म कर जब प्रधानमंत्री चले ग□ तो □क खोखला सन्नाटा अपनी जगह बनाने में कितनी आसानी से, कितनी जल्दी सफल हो गया! क्यों? क्योंकि प्रधानमंत्री ने कहा कुछ भी नहीं! ऐसा लगा कि वे शब्दों की तोप चलाते रहे और जब शब्द चुक ग□ तो वे चुप हो ग□□

प्रधानमंत्री ने जिस भारत की तस्वीर खींची उसका सत्त्व, उनके ही कहे मुताबिक बाजार है□ वे कहते हैं कि जो देश बाजार में बिकता है और बाजार बनाता है वही सबसे अव्वल होता है, विश्वगुरु बनता है□ मोदी के भारत को वहां पहुंचना है□ इसकी कीमिया कहां है- मेक इन इंडिया का आमंत्रण और मेड इन इंडिया का साम्राज्य! चुनावी सभाओं में, जिसका नरेंद्र मोदी को खासा अभ्यास है, इस पर तालियां बजेंगी□ लेकिन जब हम इस नारे को खोलते हैं तब क्या मिलता है? खाली हवा!

मान लें कि मोदी की बात मान कर दुनिया भर की कंपनियां भारत में अपने उद्योग लगाने आ□ तो हम उन्हें क्या देंगे- सस्ते मजदूर जिनकी सुरक्षा के लि□ कोई श्रम कानून नहीं होगा? जमीन जो सरकारी दमन के कारण माटी के मोल मिल जा□ गी? बिजली जो अपने देश में कितनी है और किस हाल में है, यह

दूसरे किसी से नहीं, पीयूष गोयल से ही पूछ लीजि□? पानी जो बा□ और भयंकर जल-जमाव तो ला रहा है लेकिन न सींच पा रहा है न प्यास बुझा पा रहा है? और इन सबका इतना सारा दोहन करके विदेशी कंपनियां जो माल यहां बना□ंगी, वह बिकने और ज्यादा मुनाफा कमाने कहां जा□गा? दूसरे देशों के बाजार में ही न?

यही मॉडल तो है जो चीन ने अपने यहां बना और चला रखा है□ मेक और मेड, दोनों ठप्पों पर आज चीन का जैसा वैश्विक □धिकार है वैसा दूसरा किसका है? पर चीन के समाज की, नागरिकों की, श्रमिकों की क्या स्थिति है□ क्या हम अब वैसे ही समाज को आदर्श मानेंगे? संघ परिवार को चीनी मॉडल से ज्यादा □तराज न हो शायद, क्योंकि वह भी □धिकारी समाज में विश्वास करता है□ लेकिन महात्मा गांधी ने आजादी की ल□ाई के दौरान जिस लोकतंत्र के बीज बो□ और आजादी मिलने के बाद से अब तक हमने जिस लोकतंत्र की सार्वजनिक साधना की है, क्या वह हमें चीन जैसा समाज बनाने देगा? इस पर सोचना जरूरी है□

प्रधानमंत्री ने कहा कि आदर्श गांव बना□ जा□ं; और उन्होंने उसकी □जेंसी भी बता दी कि सारे सांसद, विधायक अपने-अपने चुनाव क्षेत्र में हर साल □क गांव को आदर्श बनाने में लग जा□ं□ लक्ष्य भी सामने रख दिया- 2019 का चुनाव□

अगर यह सत्ताकेंद्रित राजनीतिक कीमिया किसी को रास आ□ तो भी यह सवाल बचा ही रहता है कि सारे सांसद-विधायक मिल कर आदर्श गांव बना□ंगे तो केंद्र और राज्यों की सरकारें क्या करेंगी? उनका लक्ष्य तो मोदीजी ने पहले ही तय कर दिया है, बजट में उसकी घोषणा भी हो चुकी है कि सौ आधुनिक शहर बसा□ जा□ंगे□ लोग बना□ं आदर्श गांव और सरकार बना□ आदर्श-आधुनिक शहर तो इसमें से कैसे भारत की तस्वीर उभरती है?

गांव या शहर के रूप में जिन्हें हम देखते हैं वे मिट्टी के लोंदे नहीं हैं कि जिन्हें आप मनचाहा आकार दे लेंगे□ ये मनुष्यों की जिंदा संरचना□ं हैं जिनके पीछे इतिहास-भूगोल-परंपरा-संस्कृति की जिंदा ताकतें काम करती हैं□ कैसे इनका तालमेल बिठा□ंगे आप? जवाहरलाल भी ताउम्र इसी जाल में फंसे हाथ-पांव मारते रहे लेकिन गांधी के ग्राम स्वराज्य में छिपी आधुनिक भारत की तस्वीर देख और समझ नहीं पा□ और नतीजा सामने है कि भारत के गांवों की कब्र पर ख□ हमारे शहर भी गंदगी, कुव्यवस्था, हिंसा, भ्रष्टाचार, मिथ्याचार, अपराध की ल□ख□ाती मीनारें बन ग□ हैं□ दिल्ली में भी, अमदाबाद-वडोदरा में भी, मुंबई-चेन्नई और बंगलुरु में भी इससे अलग क्या ख□ा हुआ है? समाज बनाने और होटल बनाने में कोई फर्क होता है या नहीं? क्या इनमें से हम कोई समाज बनता हुआ देख पा रहे हैं?

प्रधानमंत्री ने अपने सामने □क ब□ा सपना यह रखा है कि देश का हर नागरिक बैंक से जो□ा जा□गा□ क्या होगा इससे? हमें इस अतिकेंद्रित बैंकिंग व्यवस्था की गहरी जांच करनी चाहि□□ यह ब□ पूंजीवालों के हित में काम करने वाली निहायत ही अकुशल, भ्रष्ट और निजी लूट में संलग्न व्यवस्था है□ आखिर जब हमारी अर्थव्यवस्था ल□ख□ा रही है तो राष्ट्रीयकृत हों कि निजी, इन बैंकों की इमारतें अट्टालिकाओं में कैसे बदल रही हैं, इनके लोगों की तनख्वाहें कहां पहुंच रही हैं, इनकी शाखाओं की चमक-दमक कैसे निखरती ही जा रही है? इनकी अकुशलता और गैर-जिम्मेदारी की अकथ कहानी किसी भी खाताधारक से सुन सकते हैं प्रधानमंत्री□ प्रधानमंत्री बस इसका ही हिसाब देश के सामने रखें कि जिन किसानों ने पिछले बीस बरसों में आत्महत्या की है, उनमें से कितनों ने बैंकों से कर्ज ले रखा था?

गांव के सूदखोर महाजन की जगह सामाजिक न्याय में विश्वास करने वाली बैंकिंग व्यवस्था हम बना सके हैं क्या? हम इस राजनीतिक बेईमानी के जाल में न फंसें कि सरकारों ने चुनावों को ध्यान में रख कर किसानों का कब, कितना कर्ज माफ किया है□ किसानों की कर्ज-माफी □क तरफ तो राजनीतिक घोटाला है, दूसरी तरफ सामान्य करदाता की बेशर्म लूट□ बैंकों के विस्तार का आज □क ही मतलब है कि जिस विकेंद्रित ग्रामीण पूंजी तक सरकार और उद्योगों की पहुंच नहीं

है, वह समेट कर शहरों में ले आई जा□ और उसका मनमाना दोहन हो□

ल□कियों-बेटियों को लेकर कितनी चिंता प्रकट की प्रधानमंत्री ने□ लेकिन जैसी संरचना की तरफ उनकी दौ□ है, उसमें सारी दुनिया में ल□कियां ईंधन की तरह इस्तेमाल की जाती हैं□ मुनाफा बटोरने वाला बाजार हो या पर्यटन को उद्योग मानने वाली व्यवस्था, अपने हर माल को सेक्स की चाशनी में लपेट कर बेचने वाला शहरी उद्योग हो या ल□कियों को रंभा या मेनका मान कर बरतने वाली राजनीति- कहां है जगह बेटियों की? तो नारे वोट ला सकते हैं लेकिन राजनीतिक सामाजिक बौद्धिक मान्यता□ बदलने का रास्ता इधर से नहीं गुजरता है□

सारी उलझन यहीं पर है कि रास्ता क्या है और वह किधर से गुजरता है□ चुनाव प्रचार के दौरान मतवाले हु□ नरेंद्र मोदी हों कि आज सत्ता पर काबिज प्रधानमंत्री, महात्मा गांधी उन्हें □ कही बात के लि□ याद आते हैं- सफाई□

यह ठीक ही है कि गंगा की सफाई हो कि प्रधानमंत्री कार्यालय के कचरे की, महात्मा गांधी का झा□ू हर जगह काम करता है, लेकिन प्रधानमंत्री जो भूल रहे हैं वह यह कि महात्मा गांधी का झा□ू सबसे पहले दिमागी गंदगी की सफाई करता था□ उस झा□ू से सभी पिटे हैं- बि□ला-बजाज भी, सोहरावर्दी और कांग्रेसी भी, संघ परिवारी और सरदार पटेल भी, सुभाष भी और हिटलर भी□ जवाहरलाल से उत्तराधिकार वापस लेने तक ग□ वे और कांग्रेस को विसर्जित करने की लिखित सलाह तक दे डाली□ दलितों की नुमाइंदगी का आंबेडकर का □ काधिकार जिसने कभी स्वीकार नहीं किया, उसी ने आजाद भारत के पहले मंत्रिमंडल में उनको जगह देने की जोरदार पैरवी की तो उसके पीछे भी दिमागी गंदगी पर झा□ू चलाने की बात ही थी□

मुसलिम सांप्रदायिकता को संगठित कर राजनीति करने की जिन्ना की रणनीति का आखिरी दम तक विरोध किया उन्होंने तो दूसरी तरफ भारतीय समाज में सभी धर्मावलंबियों की समान हैसियत बनाने के सवाल पर गोली खाई उन्होंने□ जयप्रकाश नारायण को कांग्रेस का अध्यक्ष बना कर नेहरू-सरदार पर अंकुश लगाने की कोशिश की उन्होंने तो देश-विभाजन बचाने के लि□ यह दुस्साहसी प्रस्ताव भी रखा कि सब कुछ उनके कंधों पर डाल कर कांग्रेस अलग हो जा□ ! लेकिन तब न कोई संघ परिवारी उनके समर्थन में आगे आया न कोई लीगी, न कोई कांग्रेसी, न कोई साम्यवादी□ इस गांधी को भुला कर जिस तरह चलने की कोशिश प्रधानमंत्री कर रहे हैं वह उन्हें लाल किले तक भले पहुंचा दे, हिंसा से लाल हो रही भारत-भूमि को हरीतिमा से भरने का मौका नहीं देगी□

फेसबुक पेज को लाइक करने के लि□ क्लिक करें- https://www.facebook.com/Jansatta

ट्विटर पेज पर फॉलो करने के लि□ क्लिक करें- https://twitter.com/Jansatta